राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन वैश्विक मुद्दे: गाँधीय विकल्प

(Contemporary Global Issues: Gandhian Alternatives)

आयोजक

राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्याल, जयपुर

प्रिय महोदय/महोदया,

राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्याल द्वारा विश्वविद्यालय नेतृत्व कार्यक्रम (यू. एल. पी.) के अर्न्तगत दिनांक 26 एवं 27 मार्च 2019 को ''समकालीन वैश्विक मुद्दे : गाँधीय विकल्प'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

निरन्तर परिवर्तनशील राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में वैश्वीकरण की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप विश्व के मानचित्र, राजनीतिक समीकरण, भू–राजनीति, आर्थिक यथार्थ एवं सांस्कृतिक स्वरूप में परिवर्तन अपने साथ अनेकों वैश्विक चुनौतियाँ लेकर आए हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, नैतिक, व्यैक्तिक, व्यवसायिक एवं आर्थिक ढाचें में हो रहे निरन्तर परिवर्तनों ने आम लोगों के जीवन को अप्रत्याशित रूप से प्रभावित किया है। वैश्विक स्तर पर व्याप्त हिंसा, शोषण, मतभेद, तनाव युक्त वातावरण, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता, भूख एवं घृणा, सांस्कृतिक क्षरण, आतंकवाद, पांथिक कट्टरवादिता, पर्यावरण का असंतुलन जैसे सामाजिक मुद्दों, पहलुओं, परिदृश्यों एवं सरोकारों का सारगर्भित एवं व्यापक विवेचन नितांत आवश्यक है।

पूर्व में किसी राष्ट्र विशेष के समझे जाने वाले मुद्दे अब अन्तर्राष्ट्रीय आयाम हासिल कर चुके हैं। विश्व भर में मानव जाति की शांति का अनुरक्षण एवं सुरक्षित–सुखी एवं समृद्ध जीवन की उपलब्धता इन चुनौतियों के सफलातापूर्वक सामना करने एवं उपयुक्त विकल्पों की खोज पर निर्भर है।

गाँधी का स्पष्ट मत है कि समाज में व्याप्त विविध चुनौतियों का प्रमुख कारण व्यक्ति के व्यवहार में प्रतिदिन हो रहा नैतिकता का क्षरण है। इस समस्या के समाधान हेतु गाँधी द्वारा एकादश व्रत का प्रतिपादन किया गया है। गाँधी ने ऐसे समाज की कल्पना की थी जो वर्गविहीन, शोषणविहीन एवं स्वतंत्रता से भरपूर हो। उनके मत में व्यवस्था के लिए अपेक्षित सामाजिक न्याय के विचारों का आधार सभी जाति व धर्म के लोगों की प्रतिष्ठा में आस्था है।

आर्थिक असमानता, अस्त्र–शस्त्र, भोग–विलास की संस्कृति से राष्ट्र का बिगाड़, मशीनीकरण, आर्थिक सत्ता का केन्द्रीकरण आदि समस्याओं के निदान में गाँधी द्वारा अभिव्यक्त स्वदेशी, संरक्षकता (ट्रस्टीशिप), रोटी के लिए श्रम, विकेन्द्रीकरण, औद्योगीकरण एवं यन्त्रीकरण का विरोध आदि सिद्धान्त निश्चित रूप से उपादेय हैं। गाँधी अंधे औद्योगीकरण एवं पागल यन्त्रीकरण की होड से मानव समाज के अस्तित्व को बचाना चाहते थे। गाँधी के आर्थिक चिन्तन में बड़े स्तर पर औद्योगीकरण से प्रोत्साहित आर्थिक हितों और शक्तियों के ध्रुवीकरण तथा

उससे उत्पन्न आर्थिक विषमताओं का सशक्त विरोध देखने को मिलता है। गाँधी ने विकसित यंत्रों पर आधारित औद्योगिक व्यवस्था को मानवता के सम्मुख उपस्थित समस्याओं का मूलभूत कारण माना एवं औद्योगीकरण की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाकर उसे मानवीय धरातल पर लाने का सुझाव दिया जिससे कि शोषण मुक्त समाज की स्थापना संभव हो सके।

राजनीति में केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति एवं करिश्मावादी व्यक्तित्व के परिणाम स्वरूप लोकतांत्रिक संस्थाओं के क्रियाकलापों में आ रही गिरावट भी एक प्रमुख समस्या के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है। इस सन्दर्भ में हिन्द स्वराज में गाँधी द्वारा की गई संसदीय लोकतंत्र की आलोचना का विश्लेषण अपेक्षित है।

प्रस्तावित संगोष्ठी का उद्देश्य इस तथ्य का विश्लेषण किया जाना है कि वर्तमान व्यवस्था के समक्ष उपस्थित विविध समस्याओं का समाधान क्या गाँधीय चिन्तन को व्यवहार में लागू किये जाने से संभव है ? इस सन्दर्भ में विचार विनिमय एवं सार्थक बहस की दिशा में यह एक विनम्र प्रयास है। संगोष्ठी में उपर्युक्त विषय एवं अन्य संबंधित पक्षों पर विचारमंथन हेतु आपके शोधपत्र आंमत्रित हैं।

निम्नांकित बिन्दुओं पर विभिन्न सत्रों में चर्चा अपेक्षित है :

- नैतिक एवं सांस्कृतिक क्षरण : गाँधीय विकल्प
- विश्व शांति के समक्ष चुनौतियाँ एवं गाँधी
- संपोषित विकास एवं गाँधी
- सामाजिक न्याय : गाँधीय विकल्प
- महिला सशक्तिकरण : गाँधीय विकल्प
- पांथिक कट्टरवादिता एवं गाँधी
- पर्यावरण संरक्षण की चुनौती : गाँधीय विकल्प
- आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याएँ : गाँधीय विकल्प

ये इंगित बिन्दु मात्र संकेतक हैं। आप अपने प्रस्तुतिकरण हेतु संगोष्ठी के मुख्य विषय की परिधि में किसी भी उपयुक्त विषय का चयन करने हेतु स्वतंत्र हैं।

हम आपसे आग्रह करते हैं कि कृपया अपने लेख का सार संक्षेप (Abstract) हमें **23 मार्च 2019** तक अवश्य प्रस्तुत कर दें। इससे हमें संगोष्ठी के सत्रों का व्यवस्थित संयोजन करने में सुविधा होगी। सार संक्षेप प्रस्तुत करने के अभाव में पत्र वाचन का प्रमाणपत्र देना संभव नहीं होगा।

headpolscienceuor@gmail.com

रजिस्ट्रेशन फीस का भुगतान ऑनलाइन/चैक/नकद द्वारा भी डायरेक्टर यू. एल.पी. राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय के नाम से किया जा सकता है।

Account No. 90360100000479
Bank Branch : UCO Bank, University Campus
IFSC Code : UCBA0002027
MICR Code : 302028019

आपसे आग्रह है कि संगोष्ठी में भाग लें एवं अपना अकादमिक योगदान दें। वित्तिय सीमा के कारण टी.ए. और डी.ए. का भुगतान संभव नहीं होगा।

रजिस्ट्रेशन फीस का विवरण :

○शिक्षक एवं रिसर्च फेला	1,000/–
○शोध छात्र	600/–
○विद्यार्थी	200/–

प्रो. निधि लेखा शर्मा
विभागाध्यक्ष एवं निदेशक यू. एल. पी.
मो. 9772111000

sharma.nidhilekha@gmail.com

डॉ. राकेश कुमार झा संगोष्ठी समन्वयक
मो. 9414254811
gandhian.rakesh@gmail.com

डॉ. राजेश कुमार शर्मा
आयोजन सचिव
मो. 9414310889
rksharma038@gmail.com

ULP NATIONAL SEMINAR

On

(CONTEMPORARY GLOBAL ISSUES : GANDHIAN ALTERNATIVES)

Organised by

Department of Political Science

University of Rajasthan

(26th -27th March, 2019)

REGISTRATION FORM

Name: _____

Designation: _____

Address: _____

Affiliation: _____

Title of the paper: _____

_____

Phone: _____ Mob: _____

Email: _____ Payment Rs _____

Place: _____ Date: __/__/_____